भगवान की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता
या ईश्वर जीव द्वारा कर्म कराता है।

जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और जीव को अपने कर्म का परिणाम भुगतना पड़ता है।

कहा जाता है कि भगवान की इच्छा के बिना किसी भी पेड़ का एक पत्ता नहीं हिल सकता। इससे कई लोग यह तर्क देते हैं कि वे वही करते हैं जो भगवान उन्हें करने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता है और सभी प्रकार के गलत सलत काम करते रहते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

बहुत से लोग कहते हैं कि 'हम भगवान की ओर तब चलेंगे जब भगवान चाहेंगे कि हम उनकी ओर चलें।' और गीता को उद्धृत करते हैं, जहां श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं खुद हर दिल में बसता हूं और मैं सबसे काम करवाता हूं। '

ये मुद्दा सुलझाने के लिए पहले ये समझना होगा कि कर्ता के दो प्रकार है। एक अप्रत्यक्ष कर्ता और एक प्रत्यक्ष कर्ता। पावर हाऊस हमे बिजली देता है। अब उस बिजली का प्रयोग कैसे करना है ये हमारे हाथ में है। यदि कोई पूछे कि पंखा कैसे चलता है? तो जबाब मिलेगा कि पंखा बिजली से चलता है। लेकिन क्या स्विच ऑन किए बिना पंखा चल सकता है? स्विच ऑन करने वाला प्रत्यक्ष कर्ता है और बिजली अप्रत्यक्ष कर्ता है। यदि कोई बिजली का तार पकड कर मर जाता है तो उसे बिजली जिम्मेदार नही है बल्कि पकडनेवाला जिम्मेदार है।

इसी प्रकार ईश्वर हमे चैतन्य शक्ति प्रदान करता है। अतः ईश्वर अप्रत्यक्ष कर्ता है और मन प्रत्यक्ष कर्ता है जो इस चैतन्य शक्ति का इस्तेमाल करके सोचता है। यद्यपि मन को चैतन्य शक्ति द्वारा सोचने के लिए मजबूर किया जाता है, क्या सोचना है ये मन पर निर्भर है। अर्थात, परमेश्वर की चैतन्य शक्ति को केवल मन की इच्छा के अनुसार निर्देशित किया जा सकता है। इसलिए मन कर्म का कर्ता है और कर्म फल भी भोगता है। ये चैतन्य शक्ति एक पल के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकती। इसलिए मन को अनिवार्य रूप से सोचना पड़ता है और मन की यह सोच वह क्रिया है जो आगे शारीरिक क्रिया में प्रकट होती है। ईश्वर सोचने के अनुसार परिणाम देता है और इसलिए कृष्ण कहते हैं, 'मन ही बंधन और मुक्ति का एकमात्र कारण है।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
भगवान की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता
या ईश्वर जीव द्वारा कर्म कराता है।

जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और जीव को अपने कर्म का परिणाम भुगतना पड़ता है।